नकारात्मक नहीं रही, सकारात्मक रही। इसलिए 'सर्वे भवन्तु सुखिन:' के मूलमंत्र को अपनाया गया है।

पंडित दीनदयाल और नानाजी इन दोनों महापुरूषों का ये जन्म शताब्दी वर्ष है। संयोग है कि एक ही समय में इन दोनों महापुरूषों ने इस पुण्यभूमि पर जन्म लिया और इनके सानिध्य में हम सबको रहने का कुछ अवसर प्राप्त हुआ। एक महापुरूष के बारे में कहा जा सकता है कि उन्होंने गहराई से अध्ययन, चिन्तन किया और विश्व के सामने एकात्म मानवदर्शन के रूप में अपने भारत के चिन्तन की प्रस्तुति दी और दूसरे महापुरूष ऐसे रहे जिन्होंने उस चिन्तन को समझकर, जमीन पर उतारने का प्रयास किया। स्वतंत्रता के

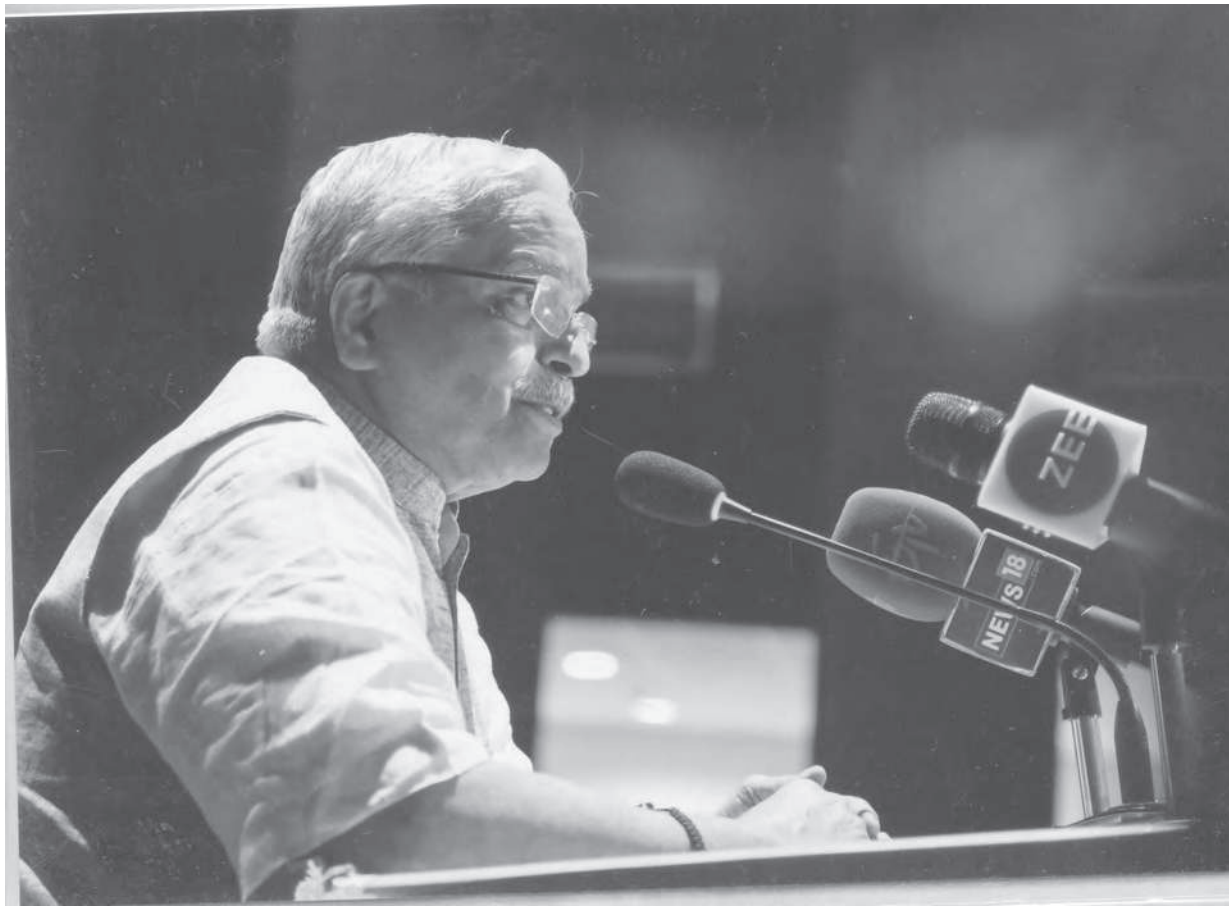

70 वर्ष पूरे हुए हैं। 71वां स्वतंत्रता दिवस हम मना रहे हैं। सत्तर साल पूर्व देश का अपना एक संविधान के आधार पर अपना राज्य शुरू हुआ। मन में प्रश्न आता है कि 15 अगस्त 1947 को जो हुआ ज़्या वह ठीक हुआ? ज़्या हमारे पूर्वजों की आकांक्षाओं के अनुरूप हुआ? गुलामी से मुज़्त हुआ भारत देखने का आनन्द तो है लेकिन एक वेदना भी हम सबके अन्त:करण में है। इसके साथ मजहब के आधार पर इस देश को दो टुकड़ों में बांटा गया। तब प्रश्न आता है कि ज़्या हम वास्तविक रूप से स्वतंत्र हुए हैं? 14 अगस्त तक जो अपने आपको भारत का नागरिक मानते थे, वह 15 अगस्त को भारत के नागरिक नहीं रहे। एक दिन में नागरिकता, एक दिन में इस देश से रिश्ता टूट सकता है, ज़्या यह संभव है? मैं मानता हूं कि ये इतना आसान नहीं है। विभाजन राजनैतिक दृष्टि से हुआ। जो राष्ट्र को राजनैतिक दृष्टि से देखते आए हैं उनकी इच्छा शायद थोड़ी मात्रा में पूरी हुई, परन्तु जो राष्ट्र को संस्कृति की दृष्टि से देखते हैं वे तो यही मानकर चलते हैं कि आज भी हम सब एक हैं। हमें अलग करने की ताकत किसी में नहीं है। लगता है कभी-कभी सांस्कृतिक बातों को लेकर चलने वालों पर राजनैतिक विचारधारा थोड़ा हावी हुई है। इस कारण देश का विभाजन हम सबको देखना पड़ा। कल्पना कीजिए कि जन्म हुआ तब मैं भारत का राष्ट्रीय नागरिक था। युवा होते-होते मैं पाकिस्तान का नागरिक बन गया और प्रौढ़ावस्था में